प्रातः क्लास 18-3-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। शिवभगवानुवाचः शाली ग्राम समझते हैं कि शिव बाबा हमको पढ़ाने आते हैं। बच्चे जानते हैं कि वही सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। बच्चों को अभी कोई नई बात नहीं लगती है। समझ में आ गया मनुष्य सभी भूले हुये हैं। विदवान पंडित आद शास्त्रपढ़ने वाले आद सभी भूले हुये हैं। जिसने पढ़ाया उनके बदली पहले नम्बर में पढ़ने वाले का नाम डाल दिया है। तुमको पहले2 इन बात पर ही बेवकुफ बनाना है। कितनी बड़ी मुर्खता है। पढ़ाने वाले के बदलीजो नम्बरवन में पास हुआ है उसका नाम गीता में डाल दिया है। तुम अभी समझते हो कि भारतवासी कितने पतित मुर्ख हैं। पहले नम्बर में गीता है जिसमें भगवानुवाच है। वह झूठी तो सभी शास्त्र झूठे हो जाते। सर्वशास्त्रमई गीता कहते हैं ना। वह झूठी तो जो भी उनके बाल-बच्चे शास्त्र हैं भारत के सभीद्धू झूठे हो जाते। भारत की ही शास्त्रों की बात है। और धर्मों के शास्त्र की नहीं। भूल ही यहां भारत के शास्त्रों में है। पहले2 तो यह सिध करना है। सिवाय तुम्हारे और कोई सिध नहीं कर सकेगा। तुमको यह शुध गर्व है। दोष तो सारा विदवानों का ही है। यह भी ड्रामा में नूंध है। इसमें कोई नफरत नहीं कर सकते हैं। बच्चे जानते हैं अनादी ड्रामा है। यह फिर भी रिपीट होगा। तुम मनुष्य मात्र को सुधारने का भी पुरुषार्थ करते हो। मनुष्य जब सुधरते हैं तो दुनिया भी सुधरती है। सतयुग है सुधरी हुई दुनिया। और कलियुग है अनसुधरी हुई दुनिया। यह भीतुम बच्चे अच्छी रीत समझते हो। और धारण कर समझाने लायक बनते हो। इस में भी बड़ी रिफाईननेस चाहिए। अभी तुम बन रहे हो। बाप तुमको कितना रिफाईन करते हैं सुधारते हैं। कुछ भी नहीं जानते हैं। बाप कहते हैं जब सुधार की जाती है तो फिर मुझे सुधारने की दरकार नहीं रहती। तुम अनार्य बन रहे पड़े थे। अभी आर्य अर्थात आदी सनातनदेवी-देवता बनना है। सो तो सतयुग में ही होंगे। वह आर्य अर्थात सुधरे हुये थे। अनसुधरेली उन्हों की पूजा करते हैं। समझते नहीं हैं कि हम क्यों उन्हों को क्यों सुधरेली कहते हैं। किसकी भी बुधि में नहीं आता है। है तो मनुष्य ही। जो सुधरेलीआर्य थे वही अभी अनसुधरेली ब्रह्मी बने हैं। आर्य औरअनार्य हैं। बाकी वह जो आर्य-समाजी हैं वह तो मठ-पंथ है। सारा झाड है। झाड़ से वलीयर समझ जाते हैं। यह है मनुष्य सृष्टि का झाड़। जिसकी आयु 5000वर्ष है। जिसका नाम कल्प-बृक्ष रख दिया है। परन्तु कल्प-बृक्ष अक्षर से मनुष्यों को बुधि में कोई झाड़ नहीं आता है। तुमको झाड़ के रूप में समझाया है कि इनको आयु 5000वर्ष है। कल्प अर्थात 5000वर्ष। वह तो कह देते हैं कल्प लाखों वर्ष का है। बाप कहते हैं नहीं। यह है ही 5000वर्ष का। और कोई ऐसे कह न सके। कितनी आयुसुनाते हैं कोई कितनी। पूरा समझाने वाला कोई होतानहीं। आपस में कितना शास्त्रवाद करते हैं। बनारस में किया था। जो हाईस्ट विदवान होते हैं उन्हों की जैसे आपस में लड़ाई होती है। वाद-विवाद करते हैं संस्कृत में। कोई बच्चा संस्कृत जानने वाला हो तो वहां जाकर समझ कर आवे वह क्या वाद विवाद करते हैं। हो भी महावीर। समझदार। जांच, जुंच कर सुनकर आवे। ऐसे2 बोलते थे। तुम्हारे लेन-देन तो है ही यह। तुम सेमीनार आदि करते हो ना। इनको स्व-स्थान कहा जाता है। प्रश्न उत्तर समझने लिए करते हो। बाबा ने यह समझाया है तुम्हारी है यह स्थानी स्व-स्थान। बाप जो तुमको पढ़ाते हैं उससे टापिक्स निकाल तुम सुनाते हो। तो वह लोग क्यासुनाते हैं वह भी जाकरसुनना चाहिए। इसमें हर्जा नहीं है। बाप को सुनाना चाहिए इस प्रकार वाद-विवाद चलाता है। यह भी जानते हैं उन्हों की है झूठी वाद-विवाद। तुम्हारी है सच्च की बात।

पहले2 तो यह समझानी देनी चाहिए गीता का भगवान कौन? भगवान बाप को भूलने कारण बिलकुल ही चट खाते में आ गये हैं। तुम बच्चों का तो बाप पर लव है ना। बाप को याद करते हो, बस बाबा ही प्राण दान देने वाला है। नालेज का दान ऐसा देते हैं जो हम क्या से क्या बन जाते हैं। तो बाप पर लव रहना चाहिए ना। बाबा हमको ऐसी2 नई बातें सुनाते हैं। शास्त्र सभी हैं झूठे। हम कृष्ण को कितना याद करते थे। वह तो कुछ देता नहीं है। नारायण को याद करते हो, याद करने से कुछ होता है क्या। हम

तो कंगाल ही हो गये हैं। एकदम इनसालवेन्ट बन पड़े हैं। देवतायें कितने सालवेन्ट थे। अभी तो सभी आर्टीफीसियल चीज़े हो गई हैं। जिसका दाम ही नहीं था उनका आज बहुत दाम हो गया है। वहां तो अनाज आद की दाम की बात ही नहीं। सभी को अपनी2 जमीनदारी सभी कुछ मिल जाता है। कोई अप्राप्त वस्तु नहीं होती* जिसकी प्राप्ती के लिए पुरुषार्थ करना पड़े। इतना भण्डारा भरपूर कर देते हैं। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों का भण्डारा भरपूर करता हूं। तुमको ऐसी नालेज देताहूं। जिससे तुम्हारा भण्डारा भरपूर हो जाता है। तुम्हारी बुधि में है। नालेज इज सौर्स ऑफ इनकम कहा जाता है। नालेज ही वास्तव में सभी कुछ है। इस पढ़ाई से तुमकितना ऊंच बनते हो। पढ़ाई का भण्डार है ना। वह टीचर्स पढ़ाते हैं उन से तो अल्प काल का सुख मिलता है। तुमको इस पढ़ाई से 21 जन्म का सुख मिलता है। तो बच्चों को खुशी होनी चाहिए ना। यह समझने में भी टाईम लगता है। जल्दी कोई समझ नहीं सकते। कोटों में कोऊ ही निकलते हैं। आधा कल्प सभी मनुष्य एक दो को गिराते ही आये हैं। चढ़ाने वाला तो एक बाप ही है। बेहद के पढ़ाने वाले बदली हद के पढ़ाई पढ़ने वाले का नाम डाल दिया है। दुनिया इन बातों को कुछ भी नहीं जानती है। कहते भी हैं भगवानुवाचः पढ़ा कर गये फिर उनका कोई शास्त्र रहता नहीं। सतयुग में कोई शास्त्र है नहीं। यह सभी हैं भक्ति मार्ग के शास्त्र। वन्डर लगता है। यह कौन है जिसके लिए कहते हैं व्यास भगवान। वह भगवान तो है नहीं। अभी बाप रास्ता बताते हैं। कहते हैं भक्ति मार्ग का भूला बुधि से निकालो। यह सब कर्म-काण्ड के शास्त्र हैं। तो पढ़ कर कर्म-काण्ड करते रहते हैं। गीता भगवत वेद-शास्त्र आदि बहुत अनेका अनेक है। जितना बड़ा झाड़ है उतना बड़ा भक्ति का झंझट है। यहडास्टार न हो तो झाड़ का नाम ही नहो। तो यह भी धारण करने की बातें हैं। तुम धारण करते हो। पढ़ाने वाला तो पढ़ा कर गुम हो जाता है। बाकी पढ़ने वाले आकर विश्व का मालिक बनते हैं। कितनी नई बात है। एक भी बात शुद्र कोई नहीं जानते। कोई की बुधि में बैठता ही नहीं। आदीसनातनदेवी-देवता धर्म के नहीं हैं। अभी तुमसमझते हो हम आर्य बन रहे हैं। पढ़ाईसे सुधर रहे हैं। जैसे बाप नालेज फुल वैसे तुम भी नालेजफुल बनते हो। टीचर के पास तो सारी नालेज होती है ना। स्टुडन्ट में नम्बरवार होते हैं। कोई पास होते हैं कोई फेल होते हैं। यह है बेहद का बड़ा इम्तहान। तुम जानते हो हम अच्छी तरह से पढ़ेंगे तोकल्प-कल्पान्तर अच्छा पढ़ेंगे। अच्छा पढ़ने वाले ही कुछ ऊंच पद पाते हैं। नम्बरवार सभी जावेंगे। सारा क्लास ट्रन्सफर होता है तो नम्बरवार जाकर बैठते हैंना। यह ज्ञान भीआत्मा है। अच्छा वा बुरा संस्कार आत्मा में हैं। शरीर तो मिट्टी हो जाता है। जो कहते हैं आत्मा निर्लेप है उनको तो 100% तमोप्रधान कहेंगे। 100% सतोप्रधान, 100% तमोप्रधान कौन है यह भी तुम समझते हो। बड़े2 हिरण्यकश्यप भी है ना। जो कहते हैं भगवान किसको कहते हो। हम ही भगवान है हमको ही याद करो। इसलिए इनका नाम ही हिरण्यकश्यप रखा है। ऐसे बड़े2 जो हैं वह समझेंगे पिछाड़ी में कि बरोबर इन्हों को तो बाप पढ़ाते हैं। तब मालूम पड़ेगा। कृष्ण भगवान नहीं हैं। सभीआत्माओं का बाप एक है। इस समय तुम नहीं समझा सकते हो। पहले तो गरीबों को ही उठाना पड़े। जब बहुतआ जावेंगे, उन गुरुओं के बाद भी अच्छे अन्यन्य आवेंगे तब ही उन सभी की बुधि खुलेगी। देखेंगे यह तो हमारे पत्ते निकलते जाते हैं। यहां के जो होंगे वह निकलते आवेंगे। बापआकर नया झाड़ शुरू करते हैं। जो और2 धर्म में जाकर पड़े हैं वह वह सभीलौटेंगे। फिर भी अपने भारत में ही आवेंगे। आगे चल करतुम समझते जावेंगे। अभीबाहर से सभी को धक्का मिलता रहता है। कोई भी बात सुनते नहीं। जहां2 बाहर वाले हैं सभी को भगाते रहते हैं। समझते हैं यह बहुत धनवान हो गये हैं। यहां आए वाले गरीब हो गये हैं। तो सभी को भगाते रहते हैं। बिचारे सभीको अपने2 धर्म में जाना है। विलायत से भी भगावेंगे। सभी अपने तरफ भागेंगे। विलायत में कोई मरते हैंतो एरोपलेन मेंयहां ले आते हैं। क्योंकि यह भारत है फर्स्ट क्लास नम्बरवन भूमि। इन जैसी पवित्र भूमि हो नहीं सकती। भारत में ही यह नई वर्ल्ड थी।

इस समय तुम इनको वायसलेस वर्ल्ड नही कह सकेंगे। अभी है विषस वर्ल्ड। इसलिए बुलाते हैं कि हे पतित-पावन आकरपावन बनो। भल दुनिया तोयही है। परन्तु इस समय दुनिया पावन तो नहीं है ना। पावन आत्मायें है मूलवतन में। वह है ब्रहम महतत्व। सभी पावन बन वहां ही जावेंगे। फिर नम्बरवार आवेंगे पार्ट बजाने। आदी सनातनदेवी-देवता धर्म का भी फाउन्डेशन है। फिर इन से तीन तबके निकलते हैं। यह जो ब्राहमण धर्म है यह कोई दयुब नहीं है। पहले यह फाउन्डेशन फिर यह तीन दयुबस निकलती है। मुख्य है चार धर्म। सब से अच्छे ते अच्छा है यह ब्राहमण धर्म। बच्चे जानते है इन्हों की बहुत भारी महिमा है। हीरे जैसा तुम यहां बनते हो। बाप तुमको पढ़ाते हैं तो तोतुम कितने बड़े हो। देवताओं से तुमब्राहमण बड़ नालेजफुल हो। यह बन्डर है ना। हम जो नालेज लेते हैं वह हमारे साथ चलती है। फिर वहां नालेज को ही भूल जाते हैं। अभीतुम समझते हैं पहले हम क्या पढ़ते थे अभी क्या पढ़ रहे हैं। आई0 सी0 एस0वाले पहले क्या पढ़ते बाद मे क्या पढ़ते हैं क्या पढ़ते हैं। बहुत फर्क रहता है। तुमको आगे चल कर बहुत पाइन्टस मिलती रहेंगी। अभी थोड़े ही बतावेंगे। पार्ट ही आगे सुनने का है। बुधि में रहता है। नालेज का पार्ट पूरा होने कारोंगातो हम भी उस समयबाबा के ज्ञान को धारण कर लेंगे। फिर हमारा पार्ट स्वर्ग में शुरू हो जावेगा। उनकापार्ट पूरा हो जावेगा। यहबुधि में बहुत अच्छी रीत धारण चाहिए। सिमरण करते रहो, मुख्य बात तो बाप को यादकर करते रहो। यदन होंगी तो पद भी कम हो जावेगा। बाप को याद करते 2 शरीर का भान निकल जावेगा। सन्यासी भी इसी अवस्था का अभ्यास करते हैं। बैठे2 देह को त्याग देते हैं परन्तु उन्हों का रास्ता होरांग है। इसलिए फिर जन्म लेनापड़ता है। फलोअर्स समझते हैंवह ब्रहम में लीन हो गया। फिर नहीं आ सकते। बाप समझाते हैं वापस कोई भी जा नहीं सकते। वास्तवमेंब्र हम को याद करना ही रांग है। हमराईट हैं। एक भी वापस जा नहीं सकता। तुम सन्यासियों आद को भी कह सकते हो। पिछाड़ी कोसभी जब स्टेज पर आ जावेंगे। फिर घर जावेंगे। वह है हद का विनाशी नाटक। यह है बेहद का अविनाशी। तुम बहुत अच्छी तरह से समझा सकते हो। यह ड्रामा जूं मिशल चलता रहता है। वह तो फिर छोटे2 ड्रामाबैठ बनाते हैं। झूठे फिल्म भी बैठ बनाते हैं। उन में कर के थोड़ी बहुतसच्ची बात होती है। जैसे विष्णु अवतरण का ड्रामा दिखाते हैं। ऐसे तो नहीं कोई ऊपर से शरर कर आते हैं। ल0ना0 पार्ट बजाते ही हैं। बाकी ऊपर से कोई ऐसे आते ही नहीं। अभी तुम बच्चेसमझते हो हमकोबेहद का बाप पढ़ा रहे हैं। और कोई मनुष्य नहीं जो समझ सके। बिलकुल ही बेसमझ हैं। तुम भी कहेंगे हम भी तूच्छबुधि थे। कुड भी नहीं जानते थे। अभी बाप ने समझाया है तोकपाट ही खुल गया है। इतनासमय जोकुछ सुना वह कोई काम का नहीं था। और हीगिरते गये। इसलिए तुम दिखाते भी हो आपे ही लिख कर देवे तब समझा जाये कुछ बुधिमें बैठा है। बाहर से नये आते हैं तो फर्मभराया जाता है। तोमालूम पड़े हमारे कुल का है। मूल बात है काप को जानना। समझाते हैं कल्प2 बरोबर बाप आकरहमको पढ़ाते हैं। तो समझें हमारे कुल का है। यह भी पूछना है कब से पवित्र रहते हो। अगर जबान लड़का है कहते हैं 6मास से पवित्र रहते हैं। विश्वास नहीं करना चाहिए। विषय सागरमेंगिर पड़ते हैं। वह जल्दी नहीं सुधरते हैं। बड़ी2 कशिश होती है। माया पकड़ लेती है। देखती है कच्चा है तो हप कर लेती है। गज कोग्राह हप करते हैं ना। कैसे अच्छे2 महारथी थे माया एकदम सारा अन्दर हव कर गई। शास्त्रो में यह मिशाल भी अभी की है। इनकोकिसको भीपता नहीं है। मंदिर में जाओ वहां भी ऐसे महारथी घोड़ेसवार प्यादे हैं। तुम बच्चे अपना ही यादगारदेखते हो। हम यह बन रहे हैं। फिर तुम्हारी भक्ति उड़ जाती है। समझते हो यह तो ईडियट है। जो जाकरमाथा टेकते हैं। तुम कहांभीमाथा नहीं टेकेंगे। तुम झट पूछेंगे इनकी बायोग्रफी कोबताओ। कहां गये? जबतुम समझते हो तब तो पूछते हो ना। बाप ने तुम बच्चों को कितना नालेजफुल बनाया है। तो इतनानशारहना चाहिए ना। पास विथ आनर आठ होते हैं। यह तोबहुत बड़ा इम्तहान है। अपन कोदेखना

चाहिए हमारी आत्मा पवित्र बनी है। बैटरी भरेगी तब जब योग पुरा होगा। मूल बात है यह। बाप ये योग होगा तब ही सतोप्रधान बनेंगे। कितना क्लीयर समझते हैं। तमोप्रधान आत्मा तो वापस जा नहीं सकती। यह भी ड्रामा बना हुआ है। वहां जनावर आद भी कोई भी दुःख देने वाली चीज़ नहीं होती। गईयां आद भी वहां की बड़ी सुन्दर होती है। कृष्ण के संग कितनी सुन्दर गईयां दिखाते हैं। बड़े आदमियों का फर्नीचर भी फर्स्ट क्लास होता है ना। वहां की गईयां भी बहुत अच्छी दूध देती थी। दूध की नदियां बहती थी। अभी वह है नहीं। वहां का नाम भी है कपला गऊ। दिखाते हैं गईयां चोरी कर ले गये। अभी तुम समझते हो तुमको चोरी कर ले जाते थे ना। तो अभी तुम्हारी बुधि में यह ख़यालात रहनी चाहिए। तुम नालेज-फुल होगये हो। इस दुनिया को तुम तुच्छ समझते हो। यह तो छी2 डर्टी दुनिया है। गन्द लगा पड़ा है। इनमें सारा कचड़ा स्वाहो जाना है। बहुत तमोप्रधान कचड़ा है। सारा किचड़ा निकल फिर स्वच्छ बन जावेंगे। अपनी राजधानी में हम जाते हैं। कितनी स्वच्छ होंगी। नाम ही है स्वर्ग। तुमको कितनी खुशी होती है। बाबा ने समझाया था तुम हास्पीटलों में डाक्टरों की भी कान्फ्रेन्स मंगा सकते हो। हम ऐसी दवाई देते हैं जो 2। जन्म लिए कब मनुष्य बिमार नहीं होता। शरीर होते भी कोई बिमारी न रहेगी। हम ऐसी बूटी देते हैं। सुन कर वन्डर खावेंगे। और सुनने लिए तुम्हारे पास आवेंगे। अभी बाप कहते हैं तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप की याद से ही सतोप्रधान बनेंगे। यह है नम्बरवन दवाई। इससे ही विकर्म विनाश होंगे। जो इस कुल के होंगे उन्हों की बुधि में अच्छा बैठ जावेगा। बिमारों को दुःख होता है ना। इसलिए हास्पीटल में जाकर समझाओ। हेल्थ मिनिस्टर को समझाना चाहिए। वेश्याओं आद का कोई मिनिस्टर नहीं। हास्पीटल तो बहुत है। उन्हों के जो बड़े हैं उनको उठाना चाहिए। और एडयुकेशन मिनिस्टर आद को समझाना चाहिए। इस नालेज के सिवाय किसकी भी चलन अच्छी होगी ही नहीं। ऐसे2 बच्चों को सर्विस का बहुत ख़याल रखना चाहिए। धन है तो सेवा करनी चाहिए। यह है ज्ञान-मार्ग की रूहानी सेवा। धन है तो इसी में ही लगाते जाये। ऐसे2 को निमंत्रण देना चाहिए। सन्यासियों से नहीं मिलना है। मिनिस्टरस आद तो बहुत हैं ना। आगे चल कर तुम्हारे पास ढेर के ढेर आवेंगे। स्थापना तो होनी है ना। बीच में थोड़े ही खिट2 होंगी। बच्चियां कहती है हमको बहुत मारते हैं। तंग करते हैं। बाबा आप अपने शरण में लो। परन्तु इसमें भी बड़ी खिट2 होती है। गवर्मेन्ट की खिट2 होती है। फिर अखबारों में घमचक्कर मचा देते हैं। तो बान्धेलियों को बन्द कर देते हैं। इसलिए बड़ा खबरदारी से कदम उठाना पड़ता है। एक के कारण बहुत बन्द होजाते हैं। अखबार से फायदा भी है तो नुकसान भी है। उन्हों को तो कोई कुछ कहे तो लिख देते हैं। खुद में तो बुधि है नहीं। तो ख़यालात चलती है कैसे युक्ति रचें। भौंक बन्द करने लिए भी युक्तियां होती है ना। तुम्हारा तो आवाज़ विलायत तक उठा हुआ है। कोई भी मानते नहीं है कि मनुष्य पवित्र कैसे रह सकते हैं। कच्चे जो हैं वह तो कोई को समझा नहीं सकते। वहां 5 विकार ही नहीं। वह है ही सम्पूर्ण निर्विकारी। बड़ा युक्ति से समझाना पड़ता है। इस पर ही कहते हैं ल०ना० आद को बच्चे नहीं होते हैं क्या? और वहां तो रावण होता ही नहीं। वह है ही रामराज्य। निर्विकारी दुनिया। तुमको समझानी कितनी मिलती है। तुम्हारा भी विचार सागर मंथन चलना चाहिए। कैसे किसको समझावें। क्या2 टापिक रखें। ड्रामा के प्लैन अनुसार अच्छे2 बच्चे दिल पर चढ़ते जाते हैं। गले का हार बनते जाते हैं। ईश्वरीय शिव तुम बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं। उनके गले का हार बनना है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सर्विस पर ही सारा मदार है। कोई छीन नहीं सकता। किसकी तकदीर में ही नहीं तो तदबीर क्या करे। जो अच्छी रीत समझते हैं धारणा अच्छी होती है। धारणा ही नहीं होती तो जरूर बुधि जरूर कहां न कहां दौड़ती रहती है। यह है गाड फादरली रूहानी नालेज। इनको स्प्रीच्युअल युनिवर्सिटी भी कह सकते हो। गाड-फादर को स्प्रीच्युअल नालेजफुल भी कहा जाता है। तुम स्प्रीच्युअल युनिवर्सिटी लिखो कोई इतराज नहीं करेंगे। बोर्ड में भी वह अक्षर मिटा कर यह लिखदेंगे। ट्रायल कर के देखो। लिखो गाड-फादरली स्प्रीच्युअल युनिवर्सिटी। इनके एम आबजेक्ट यह है। गाडफादरली वर्ल्ड स्प्रीच्युअल युनिवर्सिटी। ओम।